Krishna Nand (BA) I Hon's (6)

(3) दैहिक युग (The Somatogenic Era) : →

दैहिक युग के आगमनो प्रांत असामान्यता की कारण एवम् उपचार के तरिकों में एक नई विचार का पदार्पण हुआ। इसकाल के विचारों ने पौराणिक सभी मान्यताओं में परिवर्तन लाया और इस मान्यता का स्थापना किया कि मानसिक रोग उतना ही वास्तविक एवम निश्चित है जितना शारीरिक रोग। Benjamin Rush (1812) ने मानसिक चिकित्सा पर एक निबंध प्रस्तुत किया। उसी आलोक में "William Griesinger" (1817 - 1868, 1840-1902) ने "Pathology and Therapy of Psychic Disorders" नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। इस पुस्तक में इन्होंने इस बात पर बल दिया कि मस्तिष्क में जब किस प्रकार का विकार उत्पन्न हो जाता है या कोई स्नायु क्षतिग्रस्त हो जाती है तो उस व्यक्ति में मानसिक व्याधि उत्पन्न होने लगती है और उसका व्यवहार अलौकिक या असामान्य हो जाता है। ~~Kraeplin के इस परिकल्पना के आधार पर~~ William Griesinger के इस परिकल्पना के आधार पर "~~Krap~~ Kraepelin" (1883) ने एक पुस्तक का प्रकाशन किया जिसमें मानसिक बीमारी का मूल कारण मानसिक विकृति माना तथा रोग के विभिन्न लक्षणों के आधार पर मानसिक रोग को भी वर्गीकृत किया। इस तरह इस काल में मानसिकरोगों को उतना ही महत्व समझा जाने लगा जितना शारीरिक रोग को। मानसिक रोग का उपचार इस काल में दैहिक आधार पर ही जाने लगी जिसके कारण रोगी के निदान में सफलता नहीं मिली। बाद में विभिन्न अनुसंधानों के आधार पर लोगों ने यह स्पष्ट किया कि स्नायु में गड़बड़ी ही मात्र मानसिक विकृति का कारण नहीं है बल्कि अन्य वैज्ञानिक कारण भी है तथा दैहिक आधार पर ही चिकित्सा से निदान नहीं हो सकता है।

दैहिक युग में वर्णित असामान्यता सम्बन्धी योगदानों से यह स्पष्ट होता है कि इसकाल में असामान्यता का वैज्ञानिक विचार प्रस्तुत हुआ लेकिन उपचार के सही प्रविधि के अभाव में इसका क्षेत्र सीमित रह गया।

Scanned with CamScanner

... Nand (N.T.) AI Hai'(T)

Krishna Nand (Niraj) AI Hai's (T)

ठीक ढंग से उपयोग करें तो उससे दूसरे व्यक्ति प्रभावित हो सकते हैं। इसी परिकल्पना पर Mesmer ने मानसिक रोगियों की चिकित्सा शुरू की। इन्होंने रोगी को अंधेर कमरे में लाया। कमरे में एक टब था जिसमें कुछ रासायनिक द्रव्यों के योग से कुछ तरल द्रव रखा था जिसमें से एक लोहे की छड़ निकली रहती थी। यह छड़ चुम्बकीय शक्ति से युक्त होता था जिसे व्यक्ति के शरीर के रोगग्रस्त भाग से स्पर्श करने पर वह भाग ठीक हो जाता था। इस तरह Mesmer ने पाया कि इस प्रविधि से Hysteria के रोगी चंगे हो जाते थे। इसी के आधार पर सम्मोहन का विकास हुआ। प्रारम्भ में Mesmer के इस कार्य का घोर विरोध हुआ लेकिन बाद में इसका अधिकांश क्षेत्र में समर्थन मिला। इस तरह Mesmer ने मानसिक व्याधि का कारण मनोजात माना तथा Hypnosis को चिकित्सा के प्रविधि के रूप प्रयोग में लाया।

"James Braid" (1795-1860) मेस्मर के कार्यों को विकसित करने में का योगदान कम सराहनीय नहीं है। इन्होंने मेस्मर के भौतिकवाद को सम्मोहन के नाम से सम्बोधित किया और इन्होंने यह महसूस किया कि सम्मोहन एक ऐसी अवस्था है जो बिना यंत्र, उपकरण या चुम्बक के भी उत्पन्न हो जा सकती है। इस तरह उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में यह एक लोकप्रिय हो गया तथा बाद में चिकित्सा का यही प्रविधि कायम रहा। "Charcot" ने अपने अध्ययन से Neurology में प्रख्याति प्राप्त की जिसके कारण इनको पेरिस के एक चिकित्सा केन्द्र का प्रधान बनाया गया। प्रारम्भ में इन्होंने Mesmer के विचारों का खण्डन किया लेकिन बाद में उनके विचारों के वे समर्थक बन गये। शार्को ने मानसिक विकृतियों का कारण मनोजात बताया और सम्मोहन के माध्यम से उसका निदान करना शुरू किया। इन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि Hysteria स्त्रियों के अलावा पुरुषों में भी पाया जाता है। इन्होंने Hysteria के सन्दर्भ में यह

Scanned with CamScanner